Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 11, Issue 1 | May 2023 - October 2023 | pp. 44-47

भारतीय ज्ञान परंपरा में सूत्र साहित्य का योगदान

नीलम शर्मा

सहायक आचार्य, इतिहास
राजकीय मूक बधिर महाविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

वेदांग साहित्य प्राचीन भारतीय सामाजिक धार्मिक और परंपरागत वैधानिक व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालता है। यह साहित्य शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, ज्योतिष तथा व्याकरण के माध्यम से भारतीय भाषाविज्ञान के वैज्ञानिक विकास के साथ-साथ सूत्रों के माध्यम से अपने समय की सामाजिक धार्मिक जटिलताओं को सुलझाने के लिए तत्कालीन धर्म विधि के अनुरूप समाधान प्रस्तुत करता है। वेदांग साहित्य विषयगत विविधता को संहिताबद्ध करने का बड़ा ही विशिष्ट प्रयत्न था। भाषागत संरचना, व्याकरण तथा समाज के विधान को संहिताबद्ध करने का प्रयास यह बतलाता है कि से सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था के सुचारु संचालन के प्रयत्न भारतीय इतिहास में अत्यंत प्राचीन काल से किए गए थे। भाषा और व्याकरण पर वैदिक काल से ही वैज्ञानिक और तार्किक आधार अपनाए गए। शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त ओर छंद से यह स्पष्ट है कि ध्वनि विज्ञान के आधार पर भाषा को वैज्ञानिक आधार पर सटीक व्याकरण देने का प्रयत्न किया गया जबकि सूत्रों के माध्यम से व्यक्ति के गृहस्थ जीवन, समाज की व्यवस्था और राज्य शासन के अत्यंत सूक्ष्म पहलुओं पर भी वैधानिक व्यवस्था बनाने का प्रयत्न किया गया। इस विषय पर अनुसंधान हेतु प्राथमिक व द्वितीय स्त्रोतों से प्राप्त सामग्री का प्रयोग करते हुए विश्लेषणात्मक अनुसंधान प्रविधि अपनाई गई है, जिसके माध्यम से वेदांग साहित्य की भारतीय इतिहास में कितनी प्रभावी व अनूठी भूमिका थी यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

संकेताक्षर—*वेदांग, सूत्र, कल्प, संस्कार, वर्णाश्रम, व्यवस्थाकार, नियामक, लौंगिक विभेद*

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक लिखित ज्ञान परंपरा की सबसे प्राचीन साहित्य कृतियाँ वेद है। वेद चार है ऋग्वेद सामवेद यजुर्वेद और अथर्ववेद। वैदिक वांग्मय में ब्राह्मण ग्रंथ साहित्य, आरण्यक साहित्य और उपनिषद् साहित्य परंपरा भी समाहित है। इस प्रकार वैदिक वांग्मय विस्तृत और विविधतापूर्ण है। वैदिक साहित्य की इस जटिलता को देखते हुए वेद के अर्थ को सरलता से समझने और वैदिक कर्मकांडो के प्रतिपादन में सहायता देने के निर्मित एक नवीन साहित्य की रचना हुई जिसे वेदांग कहा जाता है। "शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तम् छन्दो ज्योतिषम्।" अर्थात् शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद और ज्योतिष ये छः वेदांग है। वेदांग का एक सुनिश्चित उद्देश्य था, वैदिक साहित्य का संरक्षण, उसकी व्याख्या करना तथा उसे व्यावहारिक प्रयोग के अनुकूल बनाना।

वेदांग शिक्षा—"स्वरवर्णाद्युचारण प्रकारों यत्र शिक्ष्यते उद्देश्यों सा शिक्षा।"—सायण

अर्थात जो स्वर, वर्ण आदि के उच्चारण के प्रकार का उद्देश्य देती है वह विद्या ही शिक्षा है। अतः यह स्पष्ट है की वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण व स्वर क्रिया की विधियों के निर्मित जो साहित्य लिखा गया उसे शिक्षा कहा गया है। वैदिक शिक्षा संबंधी प्राचीनतम साहित्य प्रतिशाख्य है। उत्तरोत्तर इसी के आधार पर नारद शिक्षा, पाणिनीय शिक्षा आदि को रचित किया गया।

व्याकरण—शब्दों की व्याख्या करनेवाला शास्त्र व्याकरण कहा गया है। यह भाषा संबंधी नियमों को स्पष्ट करता है।

"यद्यपि बहुत नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्। स्वजनो श्वजनो मा भूत् सकलं शाकलं सकृच्छकृत।"— पतंजलि

अर्थात् व्याकरण का ज्ञान होना अत्यंत ही महत्वपूर्ण था। वैदिक साहित्य के अध्ययन, वैदिक शब्दों के विषय में उत्पन्न संदेहों के निवारण आदि की दृष्टि से व्याकरण का अध्ययन किया जाना अत्यधिक महत्वपूर्ण था। पाणिनी की अष्टाध्यायी, कात्यायन की वार्ता, पतंजलि का महाभाष्य, जयादित्य व वामन की काशी का व्याकरण ही प्रमुख कृतियाँ रही है।

निरुक्त—यास्क ने निरुक्त की रचना की। कठिन वैदिक शब्दों के अर्थ तथा व्याख्या को जानने समझने हेतु निरुक्त का ज्ञान आवश्यक है।

छंद—वैदिक मंत्रो का संकलन छंदबद्ध रूप में हुआ है अतः उनके उचित उच्चारण के लिए छंदों का ज्ञान आवश्यक है। पाणिनी ने छंदों को वेदों के पैर की उपमा दी है। उनका मानना है कि छंद के बिना वेद चलने में असमर्थ हैं।

ज्योतिष—यज्ञ से अभिष्ट फल की प्राप्ति हेतु अति आवश्यक था कि उनका अनुष्ठान शुभ समय पर किया जाए इसी धारणा ने ज्योतिष वेदांग को उद्भुत किया ज्योतिष की सर्वप्राचीन रचना है मगध मुनि का वेदांग ज्योतिष।

"यो ज्योतिष वेद स वेद यज्ञम्।"—मगध मुनि

अर्थात जो ज्योतिष को जानता है वही यज्ञों का यथार्थ ज्ञाता हो सकता है। वेदांग ज्योतिष के ऋग्वेद से संबंधित ग्रंथ को आचार्य ज्योतिष तथा यजुर्वेद से संबंधित ग्रंथ को या जो ज्योतिष कहा जाता है। वेदांग ज्योतिष भारतीय ज्योतिष शास्त्र का मूल आधार है।

कल्प—सूत्रसाहित्य कल्प के अंतर्गत आता है इनकी रचना वैदिक साहित्य के अत्यंत विस्तृत हो जाने के कारण यज्ञ नियमों, सामाजिक, धार्मिक विद्वानों को व्यावहारिक उपयोग योग्य बनाने के उद्देश्य से की गई।

साहित्य

इनमें छोटे-छोटे वाक्यों में सूत्र बनाकर सभी महत्वपूर्ण विधिविधानों को प्रस्तुत किया गया।

"कल्पो वेदविहितानां कर्मणामानुपूव्येर्ण कल्पनाशास्त्रम्।"

अर्थात कल्प का अर्थ है वेद में विहित कर्मों की क्रम पूर्वक व्यवस्थित कल्पना करनेवाला शास्त्र। कल्पसूत्र चार प्रकार के है।

श्रोतसूत्र—श्रोतसूत्र से तात्पर्य श्रुति अर्थात् (वेदों से संबंधित यज्ञ भाग से है)। श्रोत सूत्रों से हम वेदों में वर्णित यज्ञ कर्मकांड और परंपराओं का विवरण मिलता है, जिसके माध्यम से हम उस समय में प्रचलित धार्मिक रूढ़ियों और परंपराओं के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते है। चारों वेदों के अलग अलग श्रोतसूत्र है। ऋग्वेद के श्रौत सूत्र है आश्वलायन श्रौतसूत्र और शंखायन श्रौतसूत्र। यजुर्वेद के श्रौतसूत्र है—कात्यायन श्रौतसूत्र, आपस्तम्ब श्रौतसूत्र, हिरण्यकेशि श्रौतसूत्र, बौधायन श्रौतसूत्र, भारद्वाज श्रौतसूत्र, मानव श्रौतसूत्र तथा वैखानस श्रौतसूत्र। सामवेद की लटकायायान श्रौतसूत्र , श्रौतसूत्र ओर श्रौतसूत्र सूत्र है। अथर्ववेद का वेतान श्रौतसूत्र है।

गृहसूत्र—गृहसूत्र से हमें गृहस्थाश्रम से संबंधित धार्मिक अनुष्ठानों, परंपराओं, नियमों और कर्तव्यों का वर्णन प्राप्त होता है। इनमें उल्लेख है कि गृहस्थ को स्व कर्तव्य और लौकिक कर्तव्य का निर्वहन करने के लिए क्या-क्या नियम और विधि का पालन करना चाहिए। वैदिक साहित्य ने चार आश्रम स्वीकार किये ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा संन्यास आश्रम। इसी प्रकार चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को स्वीकृत किया गया। सभी आश्रमों की धुरी गृहस्थ आश्रम को माना गया, इससे गृहस्थ आश्रम की महत्ता स्थापित होती है। गृहसूत्र हमें इसी गृहस्थ आश्रम के विविध कर्तव्यों, नियमों, विधि-विधानों और इसमें संपादित होने वाले विविध संस्कारों, यज्ञों तथा विविध ऋणों से उऋण होने की प्रक्रिया और उनके महत्त्व के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। प्रमुख गृहसूत्र है शंखायन गृहसूत्र, आश्वलायनगृहसूत्र, बौधायन गृहसूत्र, आपस्तंब गृहसूत्र, हिरणकेशी गृहसूत्र, भारद्वाज गृहसूत्र, गोभिलगृह्यसूत्र, कौशिक गृहसूत्र इत्यादि।

धर्मसूत्र—धर्मसूत्र अपने समकालीन सामाजिक जीवन की रोचक जानकारी प्रस्तुत करते हैं। इनमें सामाजिक नियमों आचार-विचार, वर्णधर्म, राजा के कर्तव्य, प्रजा के विधान-नियम, उत्तराधिकार के नियम, प्रायश्चित विधान, कराधान, उत्तराधिकार नियम, नियोग के नियम, स्त्रियों हेतु नियम-विधान आदि का विवरण प्राप्त होता है। प्रमुख धर्मसूत्र है वशिष्ठ धर्मसूत्र, मानव धर्मसूत्र, बौधायन धर्मसूत्र, आपस्तंबधर्मसूत्र

,गौतम धर्मसूत्र इत्यादि। आगे चलकर इन्हीं से स्मृति ग्रंथों का विकास हुआ।

शुल्वसूत्र—शुल्वसूत्र में शुल्व का अर्थ होता है नापने की डोरी इसमें यज्ञवेदियों के निर्माण, स्थान, चयन इत्यादि की जानकारी मिलती है यह तत्कालीन समय के ज्यमिति ज्ञान का परिचायक है।

सूत्र साहित्य भारतीय साहित्य का एक अनूठा वर्ग है, जिसकी शैली ही अद्भुत है। वैदिक काल में सूत्रों का अध्ययन-चिंतन की एक परंपरा का प्रतिनिधि है और भारतीय साहित्य में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। सूत्रसाहित्य एक ऐसी श्रृंखला है जो वैदिक साहित्य को परिवर्ती संस्कृत साहित्य से जोड़ती है। भारतीय साहित्यिक परंपरा में सूत्रसाहित्य एक प्रमुख ज्ञान परंपरा का सूचक है। प्राचीन भारतीय साहित्य में ज्ञान परंपरा की दो विधियां थी—एक थी आख्यान परंपरा और दूसरी थी नियामक परंपरा। महाकाव्य जो पहली श्रेणी का प्रतिनिधित्व करते है वहीं सूत्र और स्मृति जैसे ग्रंथ नियामक वैधानिक ग्रंथों की श्रेणी में आते हैं। सूत्र शब्द का अर्थ है धागा, और सूत्रों में छोटे अर्थ गर्भित वाक्यों को मानो एक धागे में पिरोकर प्रस्तुत किया गया है। संक्षिप्तता इनकी विशेषता है किंतु गृहसूत्र और धर्मसूत्र अपने समकालीन समाज,धर्म, विधान आर्थिक वह राजनीतिक स्थिति के प्रति गागर में सागर प्रस्तुत करते हैं। सूत्र रचनाओं में अनेक शताब्दियों और जीवन के क्षेत्रों के ज्ञान का भंडार एकत्रित किया गया है। वे शताब्दियों की चिंतन मनन और अध्ययन के परिणाम हैं। धर्मसूत्र अपौरुषेय न होकर पौरुष रचनाएं हैं।

सूत्र साहित्य का मूल निश्चित ही वैदिक साहित्य है किंतु वैदिक साहित्य से इतर इसके नियम, विधान गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने वालों के लिए अनेक क्रिया विधान किस प्रकार पूर्णतया वैदिक धर्मविधि प्रक्रिया के आधार पर वैदिक संस्कृति के अनुरूप किये जाए इसको सूत्र साहित्यकार सुनिश्चित करते हैं। सूत्र साहित्य जीवन के प्रति क्रियाकलाप का आधार धर्म को स्वीकारता है और इस धर्म का मूल वेद है जो कि अपौरुषेय रचनाएं हैं।

"वेदो धर्म मूलम्।"—गौतम धर्मसूत्र

धर्मसूत्र आचार और नैतिक भावना को मानव और समाज दोनों की चरित्र के लिए अति आवश्यक मानते हैं।

"आचार्य परमो धर्म सर्वेषामिति निश्चयः। हीनाचार प्रेतात्मा प्रेत्य चेह चचनश्यति।।"—वशिष्ठ धर्मसूत्र

सूत्र व्यवस्थाकारों की अनुसार वैदिक साहित्य और धर्मानुसार व्यक्ति, समाज वे राजा के आचरण का मापदंड धर्म का पालन था, जो सत्य शील, सदाचरण,, अहिंसा, परोपकार, दया और क्षमा के भावों पर आधारित था। धर्म का अनुशीलन कैसे और किस प्रकार किया जाए, किन अनुष्ठानिक क्रियाओं और संस्कारों का पालन इस सदाचरण का मापदंड सुनिश्चित करता है इसे ही धर्मसूत्र साहित्य प्रस्तुत करता है। इस प्रक्रिया में गृहसूत्र, श्रौतसूत्र और धर्मसूत्र व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामाजिक आचरण तथा व्यवहार के नियम निर्माण के मानदंडो को निर्धारित व स्थापित करते है। यदि व्यवहार की इन मानदंडों का व्यक्ति, शासक और समाज पालन नहीं करता है तो वह किस प्रकार के पाप की श्रेणी में आता है इसका उल्लेख भी सूत्र साहित्य में आता है।

"अथ खल्वयं पुरूषो याप्येन कर्मणा लिप्यते....।"

—गौतम धर्मसूत्र

अर्थात् इस संसार में मनुष्य बुरे कर्मों के करने से पाप से लिप्त हो जाता है। तप, उपवास और यज्ञ धर्म में आस्था उत्पन्न करके उत्तम आचरण की प्रेरणा देते हैं। किस पाप का वर्णाश्रम धर्मानुसार क्या प्रायश्चित निर्धारित है यह भी सूत्रसाहित्य स्पष्ट करता है। साथ ही यह अध्ययन हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है कि सूत्र साहित्य के रचना काल में वर्ण व्यवस्था ने समाज में सोपानी क्रम अधिक मजबूत बना दिए, जो धीरे-धीरे जड़ता पूर्ण जन्म आधारित जाति व्यवस्था के रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत हुए और यहीं से न्याय का सिद्धांत मानव मात्र के लिए न होकर जाति व लिंग के अनुसार निर्धारित होने लगा और एक ही प्रकार के पाप करने पर उच्च जाति वर्ग के लिए अलग प्रकार के दण्ड और स्त्री वर्ग तथा निम्न जाति वर्ग के लिए अलग प्रकार के दण्ड विधान प्रस्तुत किए गए। इन विधानों से भी हमें तत्कालीन समय और समाज को जानने-समझने हेतु साक्ष्य प्राप्त होते हैं। वैदिक साहित्य से प्रेरणा लेते हुए सूत्र साहित्य की रचयिताओं ने अपने समय में प्रस्तुत समस्याओं और चुनौतियों के समाधान प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया। सामाजिक संस्कारों के माध्यम से किस प्रकार से धर्मानुसार वर्णाश्रम व्यवस्था को बनाये रखा गया, इसे सूत्र साहित्य स्पष्ट करता है लेकिन इसके साथ ही इससे प्राप्त साक्ष्य महिलाओं और निम्न वर्णों की प्रति तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के भेदभावपूर्ण रवैये को भी यह उजागर करता है। ऐसे में सूत्र

साहित्य से प्राप्त साक्ष्य भारतीय ज्ञान परंपरा में इसके महत्त्व को रेखांकित करती है।

निष्कर्ष

वैदिक साहित्य की रचना काल के पश्चात है जब समाज में राजनीतिक आर्थिक और धार्मिक रूप से नई परिस्थितियाँ और चुनौतियाँ प्रस्तुत हो रही थी उस परिदृश्य में एक लंबे कालखंड में कल्पसूत्र साहित्य की रचनाकार इन नई परिस्थितियों और चुनौतियों के संदर्भ में सामाजिक व्यवस्था कि सुचारू संचालन के लिए विविध प्रकार की नियम विधानों की स्थापना कर रहे थे जिन की परिधि में समाज के प्रत्येक वर्ग आते थे लेकिन यहाँ हमें ध्यान रखना होगा कि ये विधान एक वर्ग विशेष के व्यवस्थाकारों द्वारा बस एक वर्ग विशेष के स्नातकों के जाननी और समझने के लिए स्थापित किए जा रहे थे लेकिन यही स्नातक आगे चल कर गृहस्थ आश्रम व्यवस्था और अन्य आश्रम व्यवस्था की आधार थे तो ऐसे में माना जा सकता है कि समाज धर्म और राजनीति के गेम्स विभिन्न आयामों पर सूत्र साहित्य की इन विधानों का अच्छा खासा प्रभाव रहा होगा। सूत्र साहित्य से हमें एक लंबे कालखंड में स्थापित सामाजिक धार्मिक व्यवस्था की गीत दैनिक जीवन से लेकर राजदंड की प्रक्रिया के आधारों के विषय में जानकारी मिलती है ये ही लोक और परमार्थ को सुधारने के लिए एक गृहस्थ को किन नियमों का पालन करना चाहिए इनकी जानकारी मिलती है उत्तराधिकार नियमों के साथ-साथ दायभाग और स्त्री के लिए क्या कर्तव्य विवाह संस्कार और उसके पश्चात निहित थे इसके विषय में भी व्यापक जानकारी प्राप्त होती है। सूत्र साहित्य अपने समय की सामाजिक नियमावली के वह मानदंड स्थापित कर रहे थे, जो वैदिक साहित्य पर आधारित थी और जिनके आधार पर आगे चल कर व्यवस्थाकारों ने स्मृति साहित्य और अन्य सामाजिक व्यवस्थाएँ प्रस्तुत की। जो सहस्त्राब्दियों तक भारतीय सामाजिक व्यवस्था का आधार रही।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. काणे, पी.वी., हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्राज, भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पूना, 1974
2. आपस्तम्ब धर्मसूत्र, स. व अनु. पैट्रिक ओलिविले, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2000
3. गौतम धर्मशास्त्र,सं. व अनु., पैट्रिक ओलिविले, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2000
4. बौधायन धर्मसूत्र, सं. व अनु.,पैट्रिक ओलिविले, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2000
5. आपस्तम्ब गृहसूत्र, सं., एम.विक्टोरिया, वियना, 1887, अनु., एच. ऑल्डेनबर्ग, सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट, XXX, ऑक्सफोर्ड, 1892
6. थापर, रोमिला, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, मेघा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2012
7. थापर, रोमिला, अरली इण्डिया : फ्रॉम ऑरिजन्स टू 1300 ए.डी., लंदन, पेंग्विन बुक्स, 2002
8. अलतेकर, ए.एस., द पोज़ीशन ऑफ वुमन इन हिंदू सिविलाइजेशन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2016